महाराष्ट्र की मीराबाई – संत जनाबाई

भारतभूमि सन्त-महात्माओं, देवगणों की प्रिय भूमि रही है। यहाँ अनेक सन्तों ने अपने जीवन-चरित्र, उपदेश-वाणी, भावमयी रचनाओं और भजनों के माध्यम से समाज को साधन-पथ, जीवन मूल्यों के साथ-साथ भगवान के पथ पर अग्रसर होने का मार्गदर्शन किया है। वर्षों से चली आ रही संत परम्परा में अनेक संतों के विषय में हम जानते हैं। महाराष्ट्र भी महान संतों की तपस्थली रही है। यहाँ कि संत परम्परा भी प्राचीन है। उनमें सन्त ज्ञानेश्वर, सन्त तुकाराम, सन्त नामदेव, संत रामदास, सन्त गोरा कुम्भार, सन्त सावता माली, सन्त मुक्ताबाई, सन्त जनाबाई आदि सन्तों का आविर्भाव हुआ। इनमें हमें पुरुष सन्तों के चरित्र की जानकारी है, परन्तु स्त्री सन्तों से हम अनभिज्ञ हैं। स्त्री सन्त जनाबाई का चरित्र व साहित्य मराठी भाषा में ही उपलब्ध है।

संत जनाबाई

सन्त कवयित्री जनाबाई का जन्म ई०सन् १२९८, महाराष्ट्र के परभणी जिले में गोदावरी तट पर स्थित गंगाखेड़ ग्राम के एक शुद्र परिवार में हुआ था। उनकी माताश्री का नाम 'करुँड' था। बचपन में ही माँ का देहान्त होने से मातृप्रेम से वंचित हो गई, तब उनके पिताजी 'दमा' ने जनाबाई को पंढरपूर के धार्मिक-वृत्ति के श्रीदमाशेरी और उनकी धर्मपत्नी मेणाबाई के हवाले कर दिया। कुछ दिन ही गुजरे थे कि उनके पिताजी भी चल बसे। बाल्यावस्था में ही अपने माता-पिताजी को खोने के बाद, जनाबाई श्री दमाशेरी और उनकी पत्नी के साथ रहती थी। वह घर के कामकाज के साथ-साथ उनके पुत्र 'नामदेव' जो बाद में विठ्ठल भक्त 'सन्त नामदेव' के नाम से जाने गए, की सेवा करती थी। [मराठी धार्मिक ग्रंथों में 'विठ्ठल' को भगवान विष्णु का अवतार माना गया है। पंढरपुर निवासी मातृ-पितृ भक्त पुंडरिक ने भगवान विष्णु के मन को जीत लिया, एवं जो ईंट पुंडरिक ने उनको खडे रहने के लिए फेंकी थी उस पर एक विशेष मुद्रा (भगवान विठ्ठल एक ईंट पर उनके दोनों हाथ कमर पर रखकर खडे हैं) में खडे उनके भक्तों को सदैव दर्शन देने का वर प्राप्त किया – 'पुंडरिक वरदा हरि-विठ्ठल'। भगवान विठ्ठल, जो विठोबा, पांडुरंग, पंढरीनाथ के नाम से लोकप्रिय हैं, इस अवतार का मंदिर पंढरपुर नगर में है।] नामदेव की विठ्ठल भक्ति, नाम-गान के साथ नृत्य करते थे; इस विठ्ठल भक्त की सेवा में जनाबाई रम गई और उस भक्त परिवार के साथ रहते-रहते जनाबाई पर भी भक्ति का रंग चढ़ गया। वह विठ्ठल (भगवान विष्णु के अवतार) के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए नियम से मंदिर जाती थी; तदुपरांत कामकाज में रहते हुए भी उनका मन उस विठ्ठल के श्रीचरणों में ही सदैव लगा रहता था। शैशव में ही अनाथ होने के कारण वह श्रीविठ्ठल को ही अपनी माँ मानती थी। विठ्ठल ही उनके पिता, भाई, सखा बन गये। विठ्ठल को सभी भगवान मानकर उनकी पूजा-अर्चना करते, लेकिन जनाबाई ने उस पूर्णावतार पुरुष को अपनी माँ बना दिया और वह 'विठाई' नाम से बुलाती थी। मराठी में 'माँ' को 'आई' कहकर बुलाते हैं। जनाबाई की भक्ति का मूलभाव – "विठाई-विठाई माझी आई कृष्णाई-विठाई", विठाई ही मेरी माँ है; कृष्ण ही विठाई है; वह मेरी है। यह उनकी भक्ति की शक्ति एवं विठ्ठल प्रेम ही है जिससे उन्होंने भगवान को अपना बना लिया। जनाबाई 'वारकरी' पंथ की ही हैं; महाराष्ट्र में विठ्ठल के भक्तों को 'वारकरी' नाम से जाना जाता है। ये लोग सदा मुख से "विठ्ठल-विठ्ठल" नाम-गान, कीर्तन, भजन करते हैं और पदयात्रा करते हुए विठोबा के दर्शन करने हर साल जाते हैं। जनाबाई भी प्रत्येक वर्ष इनके साथ जाती थी। इस विठ्ठल गान को अभंग कहा जाता है; 'अ-भंग' का अर्थ है कभी भी भंग न होनेवाला, ऐसा है हरि विठ्ठल का नाम।

विठाई के अभंग गाते-गाते जनाबाई तल्लीन होकर उसी में खो जाती थी। ऐसी भक्ति जो सदैव खाते-पीते, उठते-बैठते, तथा काम करते समय विठ्ठल को ही याद करती थी। उन्होंने विठाई को ही सर्वस्व माना था। इस कारण जनाबाई कभी अपनी विठाई को काम करने के लिए बुलाती थी, कभी उनको डाँटती थी, कभी याचना करती थी, कभी उनको सजाती थी, तो कभी अपना दु:ख उससे बाँटती थी। अपने सारे काम-काज और सुख-दु:ख की बातें वह अपनी विठाई के साथ ही करती थी, "हे! विठ्ठल मुझे कितने भी जन्म क्यों न लेने पड़े पर हर जन्म में मैं आपकी ही सेवा करूँ। आपके ही गुण गाऊँ। मुझे संत नामदेव जैसे गुरु और

विठ्ठल भक्त मिले। उनकी और तुम्हारी भक्ति मिले।" उनकी यह भगवत् याचनाऐं 'अभंग' आज भी महाराष्ट्र में बहुत लोकप्रिय है। लाखो वारकरी पंढरपूर हर साल विठ्ठल के दर्शन के लिए जाते हैं। पदयात्रा आड़ंदी (पुणे) से पंढरपूर तक की होती है, जहाँ ऊँच-नीच, जाति का भेदभाव नहीं होता। रास्ते में वारकरी संतो के गीत, अभंग गाते हुए और 'ज्ञानेश्वर माऊली, ज्ञानबा तुकाराम' ऐसे बोलते हुए चलते हैं। अभंग गाते-गाते जनाबाई नाचती थी। अभंगों की रचना विविध छंदो में हैं, इसमें प्राकृतिक उपमाऐं, शरणागति होती है।

जनाबाई ने अपने विठ्ठल की भक्ति में अनेक अभंगों की रचनाऐं की है जो संत नामदेव कि रचनाओं में सम्मिलित हो गई है। आज जनाबाई के ४० से भी अधिक अभंग(मराठी में) उपलब्ध हैं। उनकी काव्य प्रतिभा अलौकिक थी एवं उनकी रचनाओं में नैसर्गिक प्रेम, भक्ति, समर्पण, आत्मबोध एवं शरणागति से रसपूर्ण है, जो उनकी नवधा भक्ति की परिपूर्णता को प्रकट करता है। जनाबाई के अभंग में अनोखी भक्ति की झलक मिलती है। विठ्ठल के प्रति प्रेम, विठ्ठल को ही अपनी माँ मानना, उनको अपने काम करने को बोलना और बुलाना, उनको डाँटना, यह सभी वारकरी भाव हैं।

कुछ अभंग निम्नलिखीत है :–

माय मेली बाप मेला.....
आता सांभाड़ी विठ्ठला.....

इस अभंग में उनकी आर्तता दिख पड़ती है। वह कहती हैं, हे विठ्ठल मेरी माता-पिता चल बसे अब तू ही मेरा सहारा है। श्रद्धा ही जनाबाई की शक्ति हे। विठोबा उनका प्रेमसखा था, जिस पर जनी ने अपार प्रेम किया, जिसने उसे विठू को माँ बना दिया। एवं उनके बाल-स्वरूप प्रेम को देखकर उस पर माता का प्रेम प्रदान करनेवाला विठू, अर्थात जनी की माँ है।

ये ग ये ग विठाबाई....
माझे पंढरीचे आई .....

शैशव से ही अनाथ, प्रेम के लिए वंचित जनी ने विठू पर अपना सर्वस्व समर्पीत कर दिया। और उनके इस विशुद्ध प्रेम से विठू उनका, एवं जनी विठू कि हुई। "तुम बिन हे देवराया कोई नहीं रे सखा।" ऐसा कहनेवाली जनी सर्वक्षण उसी विठू के भक्ति में विभोर रहती।

झाडलोट करी जनी। केर भरी चक्रपाणी।
पाटी घेऊनि डोईवरी। ने ऊनिया टाकी दूरी।।
ऐसी भक्ति सी भुलला। नीच कामे करु लागला।
जनी म्हणे बा विठ्ठला। काय उतराई होऊ तुला।।

श्रीविठ्ठलनाथ

जनाबाई का स्वत: का संसार नहीं था। नामदेव का संसार ही उनका संसार हो गया था, जहाँ उसे घर के सभी काम करने पड़ते थे। इस अभंग में जनाबाई के कष्ट एवं संसार कर्म के निवारणार्थ स्वयं भगवान विठ्ठल माँ के रूप में अपनी जनी के साथ काम करते थे। घर कि सफाई जनी करती, कूड़ा भरता चक्रपाणी (विठ्ठल) अपने सिर पर टोकरी लेकर दूर बाहर कूड़ा फेंक आता। जनी कि भक्ति में भूला विठू वह जनी के सभी गृह कार्यों में मदद करता था। यह देख जनी कह उठी,''तू मेरे सभी कष्टों का निवारण करता है, तेरी इस कृपा के लिए मैं क्या उतराई दूँ।

गाता विठोबाची कीर्ती। महापातके जळती।।
सर्व सुखाचा सागर। उभा असे विटेवर।।

''विठ्ठल - विठ्ठल छंद में मन रम गया'' – इस भाववस्था में अखण्ड रमण करनेवाली जनी को भय-चिंता किसी भी प्रकार स्पर्श ना कर सके। नित्य विठ्ठल दर्शन करने वाली जनी के लिए पंढरपूर भू-लोक वैकुण्ठ, सुख का पिहर, आनन्द का निधान है। इस अभंग में विठ्ठल के नाम से लौकिक ताप नष्ट होता है एवं सुख सागर प्राप्त होता है। यही विठ्ठल ईंट पर खड़ा है। इस अभंग में उसके विठ्ठल के सर्वव्यापकता के भाव को प्रकट किया है।

संत ज्ञानदेव कहते हैं – 'जनाबाई की अनोखी विठ्ठल भक्ति से संत पद को प्राप्त किया और सर्वव्यापक ईश्वर को जीत लिया।'

उनकी विठ्ठल से केवल एक ही प्रार्थना थी कि, 'हे विठ्ठल – मुझे कितने ही जन्म क्यों न लेने पड़े पर हर जनम में मैं आपकी ही सेवा करूँ। आपके ही गुण गाऊँ। मुझे संत नामदेव जैसे गुरु और भगवद्-भक्त मिले। उनकी और तुम्हारी भक्ति मिले।' इस भगवत् भाव के साथ जनाबाई का

शरीर विठाई की सेवा करते-करते १३५० में विलीन हो गया। लौकिक जगत् में वह संत नामदेव के घर की एक नौकरानी थी। उनके ही घर में वह आखरी दम तक उनकी सेवा करती रही। ऐसा कहा जाता है कि संत नामदेव और जनाबाई के पार्थिव शरीर का अंत एक ही दिन हुआ। उसे लोग हमेशा 'नामयाची जनी' अर्थात् नामदेव की जनी ऐसा ही जानते हैं। उन्हें महाराष्ट्र की मीराबाई ऐसा भी कहा जाता है।

श्रीमद्भागवत् की गोपियों का कृष्ण-प्रेम और संत जनाबाई का विठ्ठल प्रेम; भक्तिरस का जिता जागता प्रतीक हैं। गोपियों ने 'कृष्ण-कृष्ण' करके पुकारा और जनाबाई ने 'विठाई-विठाई' करके श्रीकृष्ण परमब्रह्म को पुकारा। विठ्ठल ही उनका सर्वस्व था, उसी रूप में जाना और दर्शन पाया। ऐसी जनाबाई और उनकी भक्ति को बारम्बार प्रणाम है।

'विठ्ठल-विठ्ठल, विठाई-विठाई।
विठ्ठल रखुमाई, पांडुरंग हरि।।'

–मातृचरणाश्रित मोहित शुक्ल

(सहायक :– डॉ. सौ. गीता कुलकर्णी एवं इन्टरनेट)

संत समागम में सत्संग

भाग-२

...गतांक से आगे–

श्रीश्रीमाँ के शुभ जन्मोत्सव (इं० ७.०६.२००९) पर संत श्रीराजेश्वरानन्दजी रामायणी का श्रीश्रीमाँ के प्रति श्रद्धा निवेदन :–

मोर मनोरथ जानहूँ नीके, बसहुँ सदा उरपुर सबहिके। माता आप मेरे मनोरथ से परिचित हैं, इसलिए यह इच्छा मन में उठती है, हृदय में होती है और माता कहाँ है? सबके दिल में। इसलिए कहने की आवश्यकता नहीं है।

अस कहि चरण गहे वैदेही,
किन हु प्रगट न कारण तेही।

अच्छा यहाँ की साधना अद्भुत है। श्री सीताजी क्या करती हैं, ना तो बात बताई कि मन में क्या है? वे कहती हैं, बताने की जरूरत नहीं है। माता आप तो सबके हृदय में है तो क्या मेरे हृदय में नहीं? अच्छा जिस हृदय में आप हैं उसी हृदय में इच्छा है। और जिनको पाने की इच्छा है वो भी हृदय में ही है। रामजी भी तो हृदय में हैं! मैं कैसे कहूँ और आप तो सब समझती ही हैं, और जब यह कहा–'असकहि चरण गहे वैदेही...।' औरों का उद्धार अपने आचरण से होगा पर माँ मैंने तो चरण पकड़ लिए हैं, मेरा उद्धार तो आपके चरणों से ही होगा। ऐसी विनम्रता और प्रेम पर प्रसन्न हो गई माता भवानी–

श्रीराजेश्वरानन्दजी

विनय प्रेम वश भई भवानी,
खसी माल मुरति मुस्कानी।
सुन सिय सत्य आशीष हमारी,
पूरी मन कामना तुम्हारी।।

एक ओर तो माता का आशीर्वाद श्री सीताजी को और रामजी को गुरुजी का आशीर्वाद – सद्गुरु का आशीर्वाद और माता का आशीर्वाद। गुरुजी बोले 'सफल मनोरथ होऐं तुम्हारे और जगदम्बा माता पार्वतीजी ने कहा पूरी मन कामना तुम्हारी।'

कितना बड़ा संकेत है। गौरीमाता का आशीर्वाद पहले मिला और गुरुजी का आशीर्वाद रामजी को बाद में मिला। इसका अर्थ है कि, जिसको माता की कृपा प्राप्त होती है उसीको गुरुजनों का आशीर्वाद मिलता है, सद्गुरु का आशीर्वाद मिलता है। यह हर युग का सत्य है और सदा ऐसी घटना घटती रही है और आज भी घटती है। परम्परा तो यह ही है। 'आम हैं आज भी जलवे तेरे, पर हर कोई देख सकता नहीं। सबकी आँखों पे परदा पड़ा है, तेरे चेहरे पे परदा नहीं।' इसीलिए गुरुजी का आशीर्वाद रामजी को मिला है और गौरीमाता का आशीर्वाद जानकीजी को मिला।

परीकर बाँधि उठे रघुराइ,
चले इष्टदेव सिरुनाइ।

अपने-अपने इष्टदेवों को प्रणाम करके सभी राजा-महाराजा गए लेकिन किसी से धनुष टूटा? धनुष टूटने का क्या कहें हिला तक नहीं, बहुत चेष्टा करने के बाद भी हिला नहीं। क्यों नहीं टूटा भाई? क्या उन इष्टदेवों में शक्ति नहीं थी? और राजाओं ने उन्हें प्रणाम किया तो उन्हें शक्ति